ISSN 2454 - 5163

प्रकाशन तिथि : 26 जून 2016, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 34, अंक 12, कुल पृष्ठ 32

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

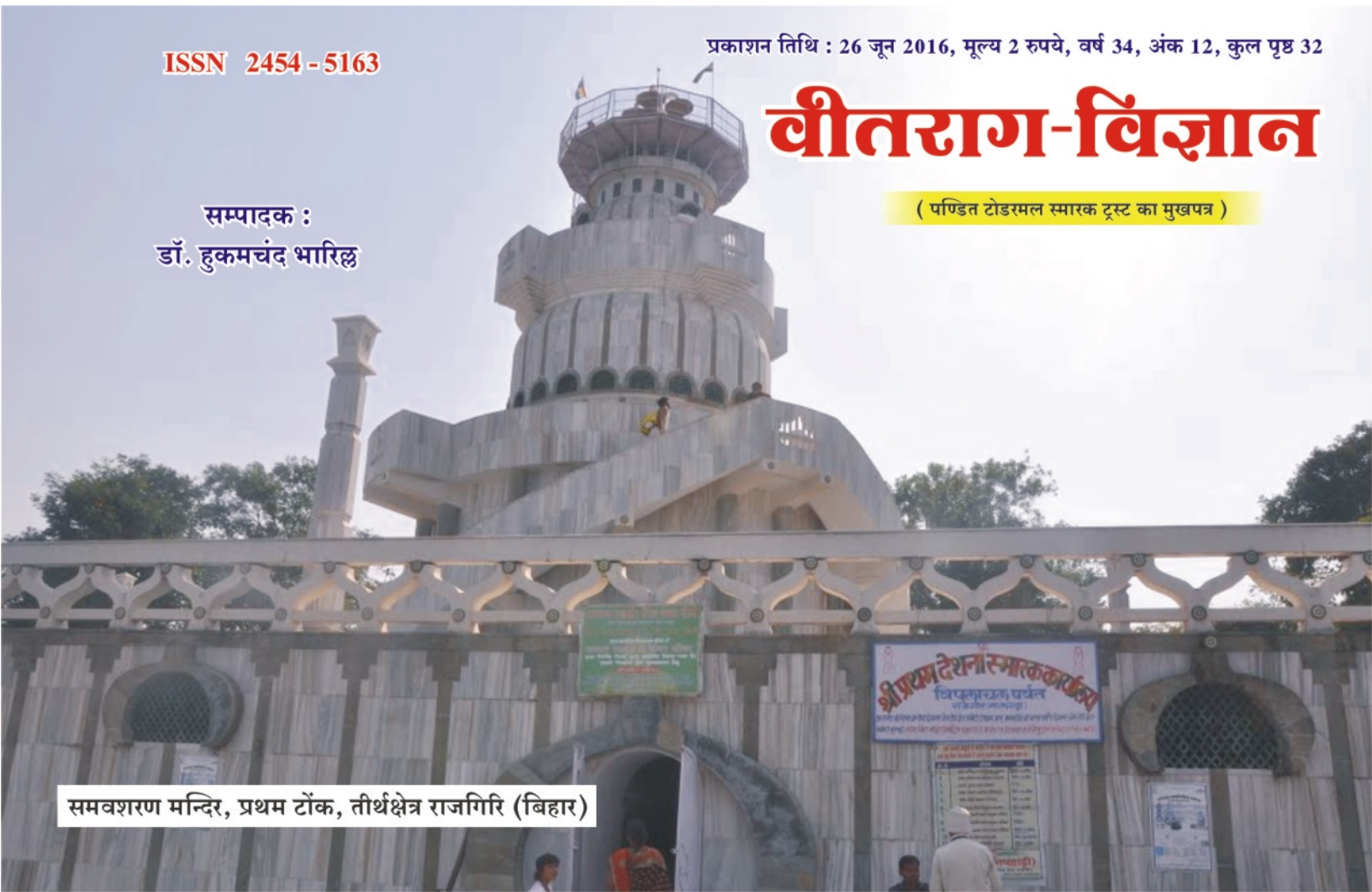

समवशरण मन्दिर, प्रथम टोंक, तीर्थक्षेत्र राजगिरि (बिहार)

वीतराग-विज्ञान (396)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10200**

सम्प्रदान शक्ति

चिदानन्द आत्मा दातार होकर निर्मल पर्याय-सम्यग्दर्शनादि का दान दे, उस दान को लेने की आत्मा की पात्रता है; किन्तु राग को या पर को ले ऐसी पात्रता आत्मा के स्वभाव में नहीं है। सम्यग्दर्शनादि भावों का स्वयं ही देनेवाला और स्वयं ही लेने वाला है-ऐसी आत्मा की सम्प्रदान शक्ति है। आत्मा अपनी वस्तु किसी अन्य को नहीं देता और अन्य की वस्तु स्वयं नहीं लेता। आत्मा में आहार ग्रहण करने की पात्रता है ऐसा नहीं कहा; किन्तु स्वयं अपने से दिये जाने वाले निर्मलभाव को ही लेने की पात्रता है ऐसा कहा है। आहार तो जड़ परमाणुओं से बना है, वह आत्मा से दिया गया भाव नहीं है और उसे ग्रहण कर सके ऐसी पात्रता आत्मा में नहीं है। आत्मा में ऐसी पात्रता है कि निर्मलभाव ही उसमें रहता है, विकार को या पर को ग्रहण करने की पात्रता आत्मा के स्वभाव में नहीं है। जहाँ स्वभाव दृष्टि की वहाँ धर्मी जीव को ऐसी पात्रता प्रगट हुई कि अपने स्वभाव में से दिये जाने वाले निर्मल भाव को ही वह उपेय रूप से स्वीकार करता है, रागादि को उपेयरूप से अपने में ग्रहण नहीं करता। मैं देनेवाला और दूसरा लेने वाला अथवा मैं लेने वाला और दूसरा देने वाला - ऐसा धर्मी नहीं मानते। मैं ही देनेवाला और मैं ही लेनेवाला - किसका ? तो कहते हैं कि सम्यग्दर्शनादि निर्मल भावों का। - इसप्रकार धर्मी अपने आत्मा को ही अपने सम्प्रदानरूप से जानता है।

- आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 543-44

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 34 (वीर नि. संवत् - 2542) 396 अंक : 12

मानत क्यों नहिं रे...

मानत क्यों नहिं रे, हे नर सीख सयानी।।टेक।।
भयौ अचेत मोह मद पीके, अपनी सुधि विसरानी।।1।।
दुःखी अनादि कुबोध अव्रत तैं, फिर तिनसौं रति ठानी।
ज्ञानसुधा निजभाव न चाख्यौ, पर-परणति मति सानी।।2।।
भव असारता लखै न क्यों जहं, नृप ह्वै कृमि बिट थानी।
सधन निधन नृप दास स्वजन रिपु, दुःखिया हरिसे प्रानी।।3।।
देह एह गद-गेह इस, हैं बुह विपति निशानी।
जड़ मली छिनछीन करमकृत, बन्धन शिवसुख हानी।।4।।
चाह ज्वलन ईंधन विधि वन घन, आकुलता कुलखानी।
ज्ञान सुधा सर शोषन रवि ये, विषय अमति मृतुदानी।।5।।
यौं लखि भव तन भोग विरचि करि, निजहित सुन जिनवानी।
तज रुष-राग 'दौल' अब अवसर, यह जिनचन्द्र बखानी।।6।।

- कविवर पण्डित दौलतरामजी

सम्पादकीय

तत्त्वार्थमणिप्रदीप

(आचार्य उमास्वामी कृत तत्त्वार्थसूत्र की टीका)

(गतांक से आगे....)

ध्यान तप

हम घर के एकान्त में बैठे-बैठे टी.वी. देख रहे हैं। उसमें खलनायक की पिटाई देखकर खिल-खिलाकर हँस पड़ते हैं; किसी झूठ पर हँस पड़ते हैं, **चोरी देखकर या शेयरों के भाव चढते देखकर प्रमुदित हो उठते हैं; तब क्या आपको ऐसा लगता है कि हम कोई पाप कर रहे हैं?**

आप तो यही सोचते हैं कि हम एकदम शान्त बैठे हैं, किसी का भला-बुरा कुछ भी नहीं कर रहे हैं; किन्तु आपको पता होना चाहिये कि आप रौद्रध्यान कर रहे हैं; जो आपको नरक में ले जा सकता है।

कुछ लोग कहते हैं कि हमारा दिल तो बहुत कमजोर है, जब कोई भावुक दृश्य आता है तो हमारी आंखों में आंसू आ जाते हैं। हिंसादि के दृश्य तो हमसे देखे भी नहीं जाते। वे ऐसा मानते हैं कि हम तो बहुत धर्मात्मा हैं, पर भाईसाहब ! आपका यह रोना-धोना आर्तध्यान है, जो आपको न केवल पशुगति में ले जा सकता है, निगोद का कारण भी बन सकता है।

यद्यपि जिनागम का अध्ययन-अध्यापन स्वाध्याय नामक तप है; आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय और संस्थानविचय नामक धर्मध्यान है; तथापि हम जब पुराण पढ रहे होते हैं, **प्रथमानुयोग का स्वाध्याय कर रहे होते हैं; तब जिन्हें हम इष्ट समझते हैं, उन्हें होनेवाली प्रतिकूलताओं में दुखी होना भी आर्तध्यान ही तो है।**

इसीप्रकार जो विषय हमें ठीक नहीं लगते, उनके वध-बंधन में प्रमुदित होना भी तो हिंसानंदी रौद्रध्यान ही है। **रावण या दुर्योधन के वध में आनन्दित होना भी तो रौद्रध्यान का ही एक रूप है।**

जो प्रथमानुयोग के शास्त्र वैराग्य के निमित्त हैं; हम अपने अज्ञान से उन्हें

पढकर भी आर्त-रौद्रध्यानरूप परिणमित होते हैं।

आप कह सकते हैं कि इसप्रकार तो देव-शास्त्र-गुरु के वियोग में दुखी होना भी आर्तध्यान में आयेगा ?

यह तो आप जानते ही हैं कि ये इष्टवियोगज और अनिष्टसंयोगज जैसे आर्तध्यान छठवें गुणस्थान तक नग्न दिगम्बर भावलिंगी मुनिराजों को भी होते हैं। उनके तो तीर्थंकरों के वियोग, अपने गुरुओं के वियोग, शिष्यों के वियोग में होनेवाले दु:खी परिणाम ही आर्तध्यानरूप होंगे; क्योंकि अन्य कोई तो उन्हें इष्ट होता ही नहीं है।

प्रश्न – क्या मुनि का यह आर्तध्यान भी तिर्यंचगति का कारण होगा?

उत्तर – नहीं, कदापि नहीं। यह तो हम पहले लिख चुके हैं कि **अज्ञानियों के आर्त-रौद्रध्यान क्रमश: तिर्यंच व नरकगति के कारण हैं; ज्ञानियों के नहीं। यह तो जिनागम में स्पष्ट ही है कि सम्यग्दृष्टि ज्ञानी जीव नरक व तिर्यंच गति में नहीं जाते।**

जब ध्यान से लाभ की बात आयेगी तो यही कहा जायेगा कि इससे रक्तचाप ठीक हो जाता है, मधुमेह में लाभ होता है, नाड़ी संस्थान भी स्वस्थ हो जाता है आदि न जाने कितने लाभ गिनाये जायेंगे; कहा जायेगा, करके तो देखिये छह माह में आपका कायापलट हो जायेगा, आप घोड़े जैसे दौड़ने लगेंगे।

जैनधर्म में जिस ध्यान के गीत गाये गये हैं, उसका फल काया से मुक्त होना है या कायापलट करना है?

अरे भाई ! मृत्यु होने पर काया तो बदल ही जाती है, असली कायापलट तो हो ही जाता है। घोड़े से दौड़कर क्या आदमी से घोड़ा बनना है ? जरा, सोचो तो सही।।३५।।

धर्मध्यान

आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयायधर्म्यम् ।।३६।।

आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय और संस्थानविचय के संदर्भ में चिन्तवन करना धर्मध्यान है।

धर्म सहित ध्यान को धर्मध्यान कहते हैं। धर्म माने वस्तु का स्वभाव

और ध्यान माने एकाग्रता, वस्तुस्वभाव के ओर की एकाग्रता ही धर्मध्यान है। यह धर्मध्यान भी चार प्रकार का है –

आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय और संस्थानविचय।

१. आज्ञाविचय – आगम की आज्ञा के अनुसार श्रद्धापूर्वक गहन विचार करना, आज्ञाविचय नामक धर्मध्यान है। बहुत से विषय ऐसे हैं; जिन्हें सीधे जानना संभव नहीं है। जैसे जमीकंद में अनंत जीव हैं – इस बात का निर्णय जिनागम के आधार से ही हो सकता है; क्योंकि वे जीव इतने सूक्ष्म है कि उन्हें इन्द्रियप्रत्यक्ष से जानना संभव नहीं है।

२. अपायविचय – मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्र संसार के कारण होने से मुक्तिमार्ग के अपाय (विरोधी/बाधक) हैं, अज्ञानी जीव इस अपाय से कैसे बचें – इस बात का प्रबल चिन्तन **अपायविचय** नामक धर्मध्यान है।

इस धर्मध्यान का दूसरा नाम **उपायविचय** भी है; क्योंकि इसमें **मुक्ति प्राप्त करने के उपाय का भी गंभीर चिन्तन होता है, मुक्ति के उपाय रूप सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का विचार होता है।** उक्त मिथ्यात्वादि तथा सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र के संदर्भ में किया गया गहन तत्त्वविचार ही **अपायविचय या उपायविचय नामक धर्मध्यान है।**

३. विपाकविचय – कर्मों के विपाक के संदर्भ में विचार करना **विपाकविचय नामक धर्मध्यान है। कौन से कर्म का विपाक या उदय कब होता है, उसका क्या फल है आदि सम्पूर्ण कर्मविषयक गहरा चिन्तन** इस विपाकविचय नामक धर्मध्यान में आता है।

४. संस्थानविचय – जिनागम में प्रतिपादित लोक का क्या आकार है ? ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और मध्यलोक की रचना आदि जैनधर्म संबंधी भूगोल का विचार, **संस्थानविचय नामक धर्मध्यान** है।

जिनागम के आधार पर प्राप्त जानकारी के अनुसार उक्त सभीप्रकार के चिन्तन विकल्पात्मक होने से व्यवहार धर्मध्यान है। **निश्चय धर्मध्यान तो देशनालब्धिपूर्वक जाने हुए निज भगवान आत्मा का अवलोकन करना, जानना और उसी में उपयोग को एकाग्र करना है।**

विशेष विचार करने की बात यह है कि शुक्लध्यान पंचमकाल में किसी को भी तथा गृहस्थों को चौथे काल में भी नहीं होता और आर्तध्यान व रौद्रध्यान करने योग्य नहीं हैं। **अब बचा मात्र धर्मध्यान, जो इस पंचमकाल में ज्ञानी सम्यग्दृष्टि गृहस्थों के भी संभव है;** मिथ्यादृष्टियों को धर्मध्यान नहीं होता।

आज जब भी ध्यान की चर्चा चलती है, तब उक्त आज्ञाविचय आदि चार प्रकार के धर्मध्यानों की तो बात ही नहीं होती तथा यह धर्मध्यान सम्यग्दृष्टियों को ही होता है – इस बात पर भी ध्यान नहीं दिया जाता।

उक्त चारों प्रकार के धर्मध्यानों की विषयवस्तु की ओर ध्यान दें तो एक बात स्पष्ट होती है कि **जिनागम के अध्ययन बिना धर्मध्यान संभव ही नहीं है; क्योंकि जिनाज्ञा जाने बिना आज्ञाविचय धर्मध्यान कैसे होगा?**

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्ररूप मुक्तिमार्ग को समझे बिना अपायविचय धर्मध्यान संभव नहीं है।

इसीप्रकार जिसमें कर्मसिद्धान्त और त्रिलोक की रचना का निरूपण है, उस करणानुयोग के ग्रन्थों के अभ्यास बिना विपाकविचय और संस्थानविचय धर्मध्यान कैसे होंगे ?

क्या ध्यान का अभ्यास करानेवाले जिनागम की उक्त विषयवस्तु से परिचित हैं? यदि हैं तो भी क्या वे ध्यानार्थियों को उक्त विषयों का अध्ययन कराते हैं ? नहीं तो फिर यह कैसा धर्मध्यान है ? ।।३६।।

शुक्लध्यान

अब अन्त में शुक्लध्यान की चर्चा प्रसंग प्राप्त है। अत: अब सबसे पहले यह बताते हैं कि शुक्लध्यान होता किन्हें है अर्थात् शुक्लध्यान के स्वामी कौन हैं।

तत्संबंधी सूत्र इसप्रकार हैं –

शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ।।३७।।

परे केवलिनः ।।३८।।

आदि के दो शुक्लध्यान श्रुतकेवली के होते हैं।

'च' शब्द से धर्मध्यान भी ले लेना चाहिए। तात्पर्य यह है कि श्रुत केवलियों को धर्मध्यान भी होता है।

अन्त के दो शुक्लध्यान क्रमश: सयोग केवली और अयोग केवली के होते हैं।

श्रेणी पर चढ़ने के पहले धर्मध्यान होता है और श्रेणी चढ़ने पर क्रमश: आरंभ के दोनों शुक्लध्यान होते हैं।

केवली और श्रुतकेवलियों को होनेवाला शुक्लध्यान पूर्णत: शुद्धोपयोगरूप ही होता है।

यह तो सब जानते ही हैं कि कर्मों की निर्जरा अर्थात् आत्मा में होने वाली **शुद्धि की वृद्धि का मूल कारण शुद्धोपयोग और शुद्धपरिणति है।**

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि छठवाँ गुणस्थान मुख्यरूप से शुभोपयोग का ही है। वहाँ असंख्यगुणी निर्जरा होती है, वह शुभोपयोगी के ही होती होगी; क्योंकि वहाँ शुद्धोपयोग तो है ही नहीं ?

ऐसा नहीं है। छठवें गुणस्थान में होनेवाली असंख्यगुणी निर्जरा का कारण वहाँ विद्यमान शुभोपयोग नहीं, अपितु **वहाँ विद्यमान तीन कषाय चौकड़ी के अभावरूप शुद्धपरिणति है।।३७-३८।।** *(क्रमश:)*

दशलक्षण महापर्व हेतु सूचना

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें। **- मंत्री**

पत्राचार का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग,**
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015
फोन नं.-0141-2705581, 2707458, फैक्स - 0141-2704127
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

विद्वानों से अनुरोध

प्रवचनार्थ जाने वाले विद्वानों से अनुरोध है कि अपनी स्वीकृति जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई-मेल द्वारा भेजें।

छहढाला प्रवचन

निजात्म-ध्यान की प्रेरणा

पुण्य-पाप फल मांहि, हरख बिलखौं मत भाई।
यह पुद्गल परजाय, उपजि विनसै फिर थाई।।
लाख बात की बात, यहै निश्चय उर लाओ।
तोरि सकल जग दन्द-फन्द, निज आतम ध्याओ।।९।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

देखो ! सम्यग्ज्ञान कैसा है ? पुण्य-पाप से भिन्न है। हे भव्य जीवो! तुम पुद्गल से भिन्न और पुण्य-पाप से भी भिन्न ऐसे चैतन्यस्वरूप आत्मा को जानकर सम्यग्ज्ञान प्रकट करो। ऐसे ज्ञानपूर्वक तुम पुण्य-पाप के फल में हर्ष-विषाद मत करो, क्योंकि वह तो पुद्गल की पर्याय है, वह उपज कर नाश होती है और पुन: प्रकट होती है। लाखों बातों में साररूप ऐसी यह एक बात है, उसको निश्चय से अन्तर में धारण करो, जगत के सब द्वन्द-फन्द तोड़कर अन्तर में अपने आत्मा का सदा ध्यान करो।

सम्यग्ज्ञान आत्मा को जाननेवाला है, वह परम अमृत है और पुण्य-पाप से भिन्न है। इसलिए कहते हैं कि हे आत्मार्थी भाई तुम पुण्य के फल में हर्ष और पाप के फल में दु:ख मत करो। पहले शुभाशुभ भावों से पुण्य-पापरूप कर्म बाँधे थे, उनके फल में जो पुद्गल संयोग मिला, वह जीव के वर्तमान प्रयत्न का फल नहीं है, उसीप्रकार उसमें जीव को सुख-दुख नहीं है, ज्ञान से वह भिन्न है। अत: उसमें हर्ष-विषाद मत करो, परन्तु उन दोनों से भिन्न ऐसे ज्ञान का सेवन करके पुण्य-पाप में समभाव रखो। मिथ्यादृष्टि पुण्य-फल में सुख और पाप फल में दु:ख मानता है अर्थात् उसमें हर्ष-शोक करता है। ज्ञानस्वरूप आत्मा की दृष्टि होने से धर्मी जीव

पुण्य और पाप एक दोनों को ज्ञान से भिन्न जानता है। लाखों बातों की सारभूत यह एक ही बात है कि जगत के सकल पुण्य-पाप का द्वन्द-फन्द तोड़कर ज्ञानस्वरूप आत्मा को नित्य ध्याओ। यह बात निश्चय कर अन्तर में धारण करो।

पुण्य-फल तो जली हुई खिचड़ी की तरह है। जैसे जली हुई खिचड़ी को कौवा, कुत्ता ही खाते हैं, मनुष्य नहीं खाता, वैसे ही आत्मा के गुण जले अर्थात् उनमें विकृत होकर राग हुआ, तब पुण्य बंधा। राग या उसका फल धर्मी जीव की खुराक नहीं है, धर्मी तो राग से भिन्न चैतन्यमय शान्ति को ही वेदता है, जबकि अज्ञानी उस राग में और राग के फल में सुख मानकर उसी को वेदता है। आत्मा अपनी शान्ति में से हटकर जब बाहर निकला तब शुभराग रूप कषायभाव हुए, इनसे पुण्य बंधा और इसके फल में लक्ष्मी इत्यादि पुद्गलों का संयोग मिला, इस प्रकार गुण की विकृति के फल में धर्मी जीव प्रफुल्लित कैसे हो ? इसमें सुख कैसे माने ? अरे ! शान्ति के लिए मुझे किसी बाह्य संयोग की आवश्यकता ही कहाँ है। मेरा ज्ञान स्वयं शान्तिस्वरूप है, इसमें राग या राग का फल नहीं है – ऐसा जानकर हे जीव ! तू अपने गुण का हर्ष कर, प्रमोद कर, चैतन्यस्वरूप भगवान आत्मा में एकाग्र होकर वीतरागी शान्ति की प्रसन्नता प्रकट कर। चैतन्य से विरुद्ध राग के फल में प्रसन्न होना तो मिथ्यादृष्टि का भाव है। सम्यग्ज्ञान होने के बाद जो अल्प हर्ष-शोक होता है, वह भी पुण्य-पाप के फल रूप संयोग को इष्ट-अनिष्ट मानकर नहीं होता तथा ज्ञान को भूलकर वह हर्ष-शोक नहीं होता। ऐसे सम्यग्ज्ञानपूर्वक जिसने पुण्य-पाप में हर्ष-शोक की बुद्धि छोड़कर समभाव प्रगट किया है, उसी को बाद में श्रावक के अणुव्रत अथवा मुनि के महाव्रत होते हैं, अत: उसका वर्णन सम्यग्ज्ञान के बाद करेंगे। सम्यग्ज्ञान बिना श्रावक-मुनिपना नहीं होता।

धन-कीर्ति-दुकान-मकान-निरोगता आदि सारे संयोग ज्ञान के कार्य नहीं हैं, वे तो पुण्य कर्म के कार्य हैं, उनमें हर्ष मत कर। वे तेरे ज्ञान की जाति के नहीं हैं। उसी तरह रोग-निर्धनता-अपयश आदि प्रतिकूलतायें पापकर्म के कार्य हैं, वे ज्ञान के कार्य नहीं हैं, अत: उन प्रतिकूल संयोगों में हताश मत हो, विषाद मत कर। पुण्य-पाप दोनों से भिन्न परम निराकुल चैतन्यस्वरूप को लक्ष में ले और उसी का

अन्तर में ध्यान कर। ज्ञान प्राप्त करके उसका स्वाद चखने पर तुझे पुण्य-पाप दोनों में से रस उड़ जावेगा, आनन्द स्वरूप के वेदन से आत्मा स्वयं संतुष्ट हो जायेगा और उसमें ही सच्ची प्रसन्नता है और वही पुण्य-पाप दोनों में समता है।

जीव ने अनादि से पुण्य को भला मानकर उसमें हर्ष किया और पाप को बुरा मानकर उसमें विषाद किया; परन्तु शान्ति कहीं नहीं मिली। ज्ञानी तो दोनों से पार चैतन्य को जानकर उसमें एकाग्रता से शान्ति का वेदन करता है। मैं अपनी शान्ति को, अपने धर्म को साध रहा हूँ – फिर संयोग में हर्ष-शोक क्या ? धर्मी को कदाचित् पापोदय से रोगादि प्रतिकूलता हो, आजीविका संबंधी कठिनाई हो, अपमान होता हो, तथापि उन सबसे उसे धर्म में शंका नहीं होती; क्योंकि ज्ञान तो संयोग से भिन्न ही है तथा अज्ञानी के पुण्य का उदय दिखाई पड़े और ज्ञानी के पाप का उदय दिखाई पड़े कि मैं धर्मी और मेरे समक्ष ऐसे संयोग। वह जानता है कि यह तो पुण्य-पाप के खेल हैं। संसार में पुण्य-पाप के खेल तो ऐसे ही होते रहते हैं, मेरा ज्ञान तो उनसे भिन्न ही है। संकल्प-विकल्प की होनेवाली तरंगावली को लांघकर स्वरूप की शान्ति में विशेष एकाग्र कैसे हुआ जाय, उसी की भावना धर्मी को होती है। पुण्य-पाप के उदय से संयोग में अनुकूलता के ढेर लगे हों अथवा प्रतिकूलता का पार न हो, तथापि उसके कारण वह अपने को सुखी-दु:खी नहीं मानता। हमारा सुख हमारे आत्मा में है, वह पुण्य-पाप से रहित है, इस सुख को हम अपने सम्यग्ज्ञान से साध ही रहे हैं, इसलिए पुण्य-पाप दोनों के संयोग के प्रति समभाव है। पुण्य हो या पाप, ज्ञानी दोनों को ज्ञान से भिन्न जानता है, थोड़ा भी हर्ष-खेद हो तो उसे भी ज्ञान से भिन्न ही जानता है अर्थात् सम्यग्ज्ञान स्वयं इस हर्ष-खेद में जुड़ नहीं जाता।

इसप्रकार पुण्य-पाप से ज्ञान को भिन्न जानकर हे भव्य जीवो ! तुम निश्चय से ज्ञानस्वरूप आत्मा को ही अन्तर में निरन्तर ध्याओ, यही लाखों का सार है। शास्त्र पढकर, वैराग्य लेकर, निवृत्ति लेकर तथा सत्संग आदि करके भी आत्मा को जानना ही सब बातों का सार है। सब कुछ कर-करके भी आत्मा को नहीं जाना तो सब असार है-व्यर्थ है। जिसने आत्मा को जान लिया, उसने सारभूत सब कर लिया। **(क्रमश:)**

नियमसार प्रवचन –

सिद्ध भगवान का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 72वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

णट्ठट्ठकम्मबंधा अट्ठमहागुणसमण्णिया परमा।
लोयग्गठिदा णिच्चा सिद्धा ते एरिसा होंति।।७२।।

(हरिगीत)

नष्ट कीने अष्ट विध विधि स्वयं में एकाग्र हो।
अष्ट गुण से सहित सिध थित हुए हैं लोकाग्र में।।७२।।

अष्टकर्मों के बंध को नष्ट करने वाले, आठ महागुणों से संपन्न, परम, लोकाग्र में स्थित और नित्य – ऐसे सिद्धपरमेष्ठी होते हैं।

(गतांक से आगे....)

अरहन्तदशा होने पर चार घातिया कर्मों का नाश किया था, सिद्धदशा प्रकट होने पर चार अघातिया कर्मों का भी नाश किया। सिद्धभगवान क्षायिकसम्यक्त्व आदि आठ गुण सहित हैं। सिद्धपद प्राप्त होने के पश्चात् अब पुनः अवतरित नहीं होंगे, इसलिए सिद्धभगवान नित्य हैं। वे सिद्धभगवान व्यवहार से लोक के अग्र में स्थित हैं। निश्चय से अपने स्व-क्षेत्र में - निज आत्मप्रदेशों में रहते हैं। ऐसे सिद्धभगवान होते हैं।

आत्मा की मुक्ति के - निजात्मा की परमानन्ददशा के परम्परा निमित्तभूत ऐसे भगवन्त सिद्ध परमेष्ठियों के स्वरूप का यह वर्णन है। मुक्ति का साक्षात् हेतु अपना आत्मा है; परन्तु आत्मा के ज्ञान होने पर विकल्प उठता है; इसलिए सिद्धि के आदर्श ऐसे सिद्धभगवान पर लक्ष्य जाता है। सिद्धभगवान में से जो पुण्य आदि निकल गया, वह मेरे में से भी निकल जाने योग्य है और सिद्धभगवान में जो ज्ञान-दर्शन-सुख आदि सहज-स्वभाव रह गया है वह मेरे में भी रहने योग्य है – इसप्रकार सिद्धभगवान को आदर्शरूप निर्णय करके अपने को जाने, तब सिद्धभगवान

परम्परा से अपने लिए मोक्ष के कारण हैं।

भगवानसिद्ध कैसे होते हैं? निरवशेषपने अन्तर्मुखाकार, ध्यान-ध्येय के विकल्प रहित, निश्चय-परमशुक्लध्यान के बल से जिन्होंने अष्टकर्म के बन्ध को नष्ट किया है – ऐसे सिद्धभगवान होते हैं। जिनको अखण्ड पूर्णानन्द प्रकट हुआ है वे सिद्धभगवन्त किस रीति से हुए? – उसका उपाय भी साथ ही बतलाते हैं। सम्पूर्णपने अन्तर्मुख जिनका स्वरूप है और जो – मैं ध्यान करनेवाला हूँ, यह मेरा आत्मा वह ध्येय है और इस आत्मा में एकाग्र होना वह ध्यान है', इत्यादि – ध्याता, ध्यान, ध्येय के विकल्प रहित हैं – ऐसे निश्चय-परमशुक्लध्यान के बल से ज्ञानावरणादि अष्टकर्म को नष्ट करके सिद्धभगवान हुए हैं।

शुक्लध्यान अर्थात् विशेष उज्ज्वल वीतरागी स्वरूपलीनता से सिद्धभगवान ने अष्टकर्म को नष्ट किया है। यहाँ अमुक क्रिया की अथवा अमुक प्रकार का विकल्प किया, इसलिये आठकर्म नष्ट हुए – ऐसा नहीं कहा। अघातियाकर्म भी शुक्लध्यान से नष्ट हुए – ऐसा यहाँ कहा है। इसके कारण टले हैं – ऐसा नहीं कहा, बल्कि शुक्लध्यान के निमित्त से अघातिया कर्म टले – ऐसा कहा है। पुनश्च, सिद्धभगवान क्षायिक-सम्यक्त्व, अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तवीर्य, सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व और अव्याबाध - इन अष्टगुणों की पुष्टि से सन्तुष्ट-आनन्दमय होते हैं। क्षायिकसम्यक्त्व आदि को गुण कहा है; परन्तु वे सभी वास्तव में तो शुद्धपर्यायें हैं – गुण नहीं। सिद्धभगवान विशिष्ट गुणों के आधार होने से बहिःतत्त्व, अन्तःतत्त्व और परमतत्त्व – ऐसे तीन तत्त्वों में से परमतत्त्वस्वरूप हैं और विशेष गुणों के आधार होने से तीन तत्त्वों में उत्कृष्ट हैं।

बहिरात्मा – शरीरादि परपदार्थ तथा पुण्य-पापादि विकारीभाव मेरा है – ऐसी मान्यता मिथ्यादर्शन है। ऐसी मान्यतायुक्त जीव बहिरात्मा है।

अन्तरात्मा – मैं चैतन्य ज्ञानानन्द परमात्मा हूँ। शरीर-वाणी या पुण्यादि विकारीभाव मेरे नहीं हैं – इसप्रकार जिसको आत्मा का सच्चा भान हुआ है, उसको अन्तःतत्त्व-अन्तरात्मा कहते हैं।

परमात्मा – जो आत्मा का यथार्थ ज्ञान करके, स्वरूप में लीन होकर पूर्ण हो गए – ऐसे सर्वज्ञ वीतराग भगवान वे परमात्मतत्त्व हैं – परमात्मा है।

पुनः कैसे हैं सिद्धभगवान? तीनलोक के शिखर से आगे गति हेतु का अभाव होने से लोक के अग्र में स्थित हैं, वे तीनलोक के शिखर से आगे नहीं जाते। वहाँ गति

के निमित्त का अभाव है इसलिए स्थिर हो गए हैं। यह व्यवहार का अधिकार है, इसलिए निमित्त से कथन किया है। वास्तव में तो सिद्धभगवान की अपने गमन की इतनी ही योग्यता है, इसलिए रुक गए हैं और निमित्त धर्मास्तिकाय भी उतना ही है। लोक के शिरोमणि सिद्धभगवान लोकाग्र में विराजते हैं। मेरा आत्मा भी स्वभाव से ऐसा ही है। सिद्ध में जो नहीं है वह मेरे में भी नहीं है और जो उनमें है वह मेरे भी है।

पुनश्च, कैसे हैं सिद्धभगवान? व्यवहार से अभूतपूर्वपर्याय में से – पूर्व में कभी हुई नहीं – ऐसी सिद्धपर्याय में से च्युत होने का अभाव होने के कारण सिद्धभगवान नित्य हैं। सिद्धभगवान को जो पूर्व में अप्रकट थी, ऐसी वीतरागीदशा केवलज्ञान-परमानन्ददशा प्रकटी है; उस परमानन्द-स्वरूप अपूर्वदशा से च्युत नहीं होने के कारण वे सिद्धभगवान नित्य है। अरहन्तदशा और सिद्धदशा आत्मा में से प्रकट हुई है। अन्दर आत्मा में अनन्तगुणों का भण्डार भरा है, उसमें से वह दशा प्रकट हुई है। त्रिकाली ज्ञानानन्द स्वभाव का अवलम्बन लेकर अभूतपर्याय प्रकटी है, वह पर्याय कभी नाश नहीं होनेवाली होने से सिद्धभगवान नित्य कहे गए हैं।

प्रश्न : अरहन्तभगवान और सिद्धभगवान में क्या अन्तर है?

उत्तर : सिद्धभगवान पूर्ण हो गए हैं और अरहन्त भगवान अभी पूर्ण नहीं हुए हैं। अरहन्त के अभी योग का कम्पन आदि विकार है, जबकि सिद्ध समस्त प्रकार से सम्पूर्ण शुद्ध हो गए हैं। फिर भी अरहन्त को प्रथम नमस्कार करने का कारण यह है कि वे शरीरी हैं, उनके वाणी का योग है, वाणी के उपकार का निमित्तपना है; अतः अरहन्त को पहले नमस्कार किया है।

जैसा सिद्धभगवान का आत्मा है वैसा ही मेरा आत्मा है, परन्तु मेरा आत्मा अभी पर्याय में अटका है। उस पर्याय का लक्ष छोड़कर त्रिकाली स्वभाव की पहचान करके सिद्धपद को प्राप्त करना चाहिए। **(क्रमशः)**

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

39वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 31 जुलाई से मंगलवार 9 अगस्त, 2016 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

1000वें महामस्तकाभिषेक के अवसर पर श्रवणबेलगोला में आचार्य श्री विद्यानन्दजी महाराज के साथ संगोष्ठी में बायें से – श्रीयुत ताराचंदजी प्रेमी, हीरालालजी कौशल (दिल्ली), डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, बाबूभाई मेहता, प्रेमचंदजी (जैना वॉच, दिल्ली), दरबारीलालजी कोठिया (बीना), निर्मलचंदजी जैन (सांसद) और पण्डित कैलाशचंदजी सिद्धांत शास्त्री।
सबसे आगे बैठे हैं – लक्ष्मीचंदजी (ज्ञानपीठ वाले), पीछे रतनचंदजी भारिल्ल और डॉ. पन्नालालजी (कलकत्ता) भी बैठे हुये हैं।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के साथ चर्चा करते हुये डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल। साथ में अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल एवं शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल भी दिखाई दे रहे हैं।

इतिहास के झरोखे से...

पण्डित फूलचंदजी सिद्धांत शास्त्री, पण्डित कैलाशचंदजी शास्त्री, पण्डित जगन्मोहनलालजी शास्त्री, पण्डित खुशालचंदजी गोरावाला आदि विद्वानों के साथ पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के मंच पर

स्वस्ति भट्टारक श्री चारुकीर्तिजी के साथ श्रवणबेलगोला में अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् के सदस्यगण, पण्डित रतनचंद भारिल्ल, ब्र. अभिनन्दनकुमार शास्त्री, श्री अखिल बंसल, श्री राजेन्द्र बंसल अमलाई, डॉ. सत्यप्रकाश दिल्ली, नीरज सतना, डॉ. राजाराम जैन नोएडा, डॉ. देवेन्द्रकुमार नीमच, पण्डित पूनमचंद छाबड़ा व अन्य

ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर
बढ़ते चरण...

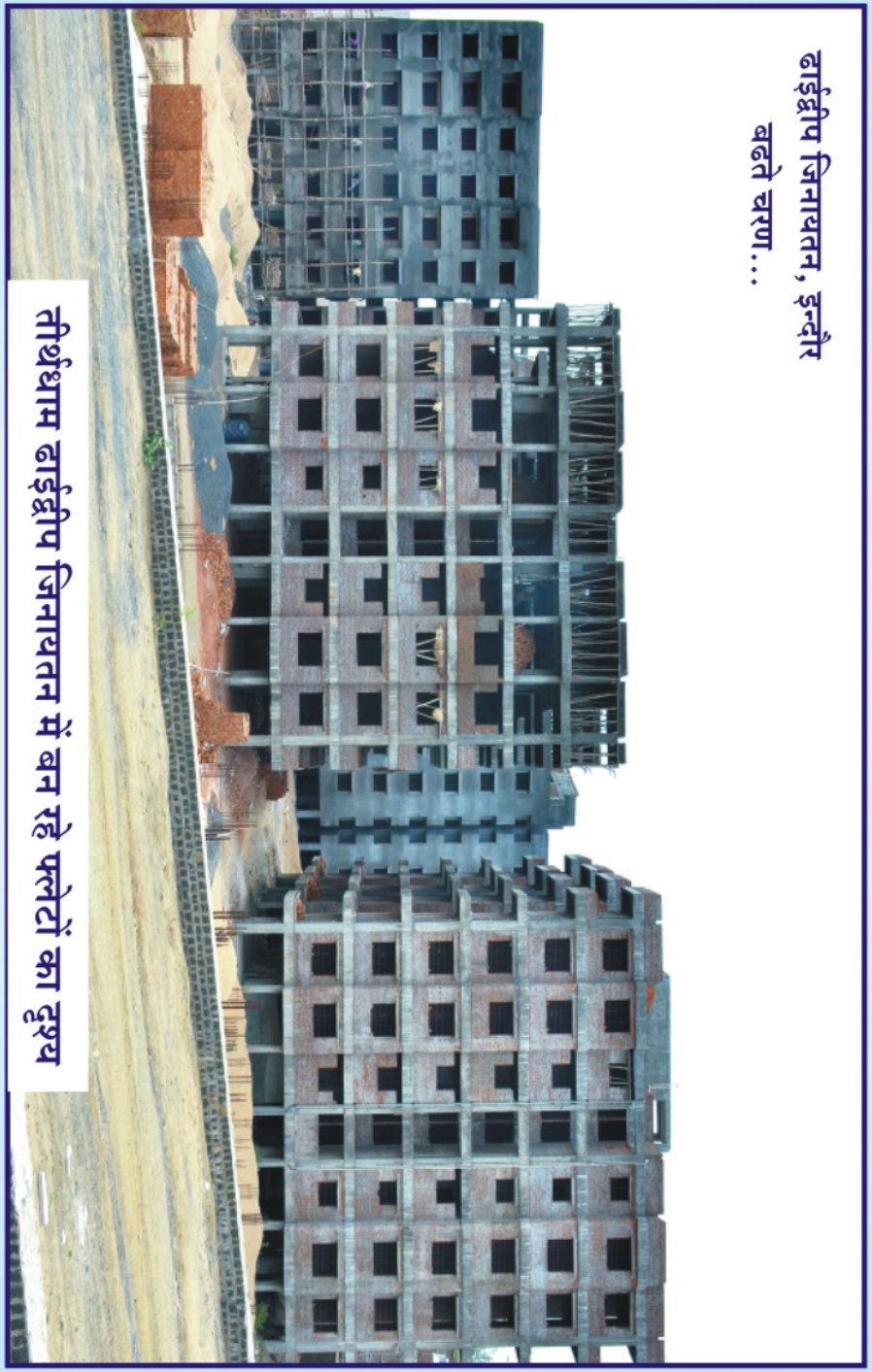

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में बन रहे फ्लेटों का दृश्य

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में बन रही 30 वेदियों में से 10 वेदियों का दृश्य

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : नयविवक्षा में बारहवें गुणस्थान तक अशुद्धनिश्चयनय होता है; वहाँ अशुद्धनिश्चयनय में शुद्धोपयोग कैसे घटता है ?

उत्तर : वस्तु का एकदेश की अपेक्षा कथन करना नय का लक्षण है और शुभ, अशुभ तथा शुद्ध द्रव्य का अवलम्बन करना उपयोग का लक्षण है; इसलिये अशुद्धनिश्चयनय में भी शुद्धात्मद्रव्य का अवलम्बन होने से, शुद्ध ध्येय होने से तथा शुद्ध साधक होने से शुद्धोपयोग परिणाम घटता है।

अशुद्धनय भले ही बारहवें गुणस्थान तक हो; परन्तु साधक जीव के उपयोग का अवलम्बन त्रिकाली शुद्ध ज्ञायकभाव है, उसका ध्येय शुद्ध है; अत: उसके भी पर्याय में शुद्धोपयोग होता है।

प्रश्न : यदि शब्द का पदार्थ के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है, तो वह शब्द पदार्थ का वाचक कैसे हो सकता है ?

उत्तर : 'प्रमाण अर्थात् ज्ञान का ज्ञेय पदार्थों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है, तो भी वह ज्ञान पदार्थों को किसप्रकार जानता है ? ' – यह बात भी उपर्युक्त शंका जैसी ही है अर्थात् जिसप्रकार ज्ञान और ज्ञेयपदार्थों का कोई सम्बन्ध नहीं है; तथापि ज्ञान ज्ञेयपदार्थों को जान लेता है; उसीप्रकार शब्द का पदार्थ के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है तो भी शब्द पदार्थ का वाचक है – इसमें आपत्ति क्या है ?

प्रश्न : ज्ञान और ज्ञेयपदार्थों में तो जन्य-जनक लक्षणवाला सम्बन्ध है ?

उत्तर: ऐसा नहीं है; क्योंकि वस्तु की शक्ति की अन्यपदार्थ द्वारा उत्पत्ति मानने में विरोध आता है अर्थात् जो वस्तु जैसी है, उस वस्तु को उसीरूप में जानने की शक्ति को प्रमाण कहते हैं। जानने की यह शक्ति पदार्थों द्वारा उत्पन्न नहीं की जा सकती। यहाँ इस विषय में श्री जयधवल भाग 1, पृष्ठ 238 का एक श्लोक उद्धृत किया जाता है –

''स्वत: सर्वप्रमाणानां प्रामाण्यमितिगृह्यताम्।
न हि स्वतोऽसती शक्ति: कर्त्तुमन्येन पार्यते।।

सर्व प्रमाणों में स्वत: प्रमाणता स्वीकार करना चाहिये अर्थात् प्रत्येक ज्ञान अपने

से ही होता है – ऐसा स्वीकार करना चाहिये; क्योंकि जो शक्ति पदार्थ में स्वत: विद्यमान न हो वह शक्ति अन्य पदार्थों द्वारा उत्पन्न नहीं की जा सकती।''

इसी श्लोक का उत्तरार्ध समयसार गाथा 116 से 120 के मध्य आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने लिखा है कि –

''स्वयं परिणममानं तु न परं परिणमयितारमपेक्षेत। न हि वस्तुशक्तय: परमपेक्षंते। अर्थात् स्वयं परिणमन करनेवाले को अन्य परिणमन करानेवाले की अपेक्षा नहीं होती; क्योंकि वस्तु की शक्तियाँ पर की अपेक्षा नहीं रखती।''

अद्भुत प्रभावना से भरे अनूठे ज्ञानकुंभ स्वर्ण जयंती प्रशिक्षण शिविर 'ज्ञानानंद महोत्सव' की विशेषतायें

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 15 मई से 1 जून तक हुये स्वर्ण जयंती शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर की विशेषतायें निम्नप्रकार हैं –

(1) शिविर में विदिशा के लगभग 40 संयमी, त्यागी, ब्रह्मचारी, विद्वानों का उनके निवास स्थान पर जाकर सम्मान किया गया। **(2)** प्रशिक्षणार्थियों की सर्वाधिक संख्या। **(3)** शिविरार्थियों की सर्वाधिक संख्या। **(4)** पाठशाला के बच्चों की सर्वाधिक संख्या। **(5)** पूरे 18 दिन तक रुकने वाले शिविरार्थियों की सर्वाधिक संख्या। **(6)** प्रवचनसार, नयचक्र, ज्ञानस्वभाव एवं पांच समवाय विषयों की सामूहिक परीक्षा आयोजित। **(7)** अंग्रेजी भाषा में प्रशिक्षण कक्षायें आयोजित। **(8)** प्रशिक्षण शिविर पर सम्पूर्ण जानकारी देने हेतु विशेष प्रदर्शनी। **(9)** मुख्य पाण्डाल में 50वें शिविर पर शिविर शिल्पकार डॉ. हुकमचंद जी भारिल्ल के विशेष 50 वाक्यांशों का प्रदर्शन। **(10)** सत्साहित्य एवं प्रवचन कैसेट का सर्वाधिक विक्रय। **(11)** देश-विदेश में बसे आत्मार्थियों ने सर्वाधिक संख्या में सम्पूर्ण शिविर का लाईव लाभ लिया। **(12)** 25 मई संकल्प दिवस पर सभी शिविरार्थियों को स्नातक विद्वानों द्वारा अपने हाथों से भोजन परोसा गया। **(13)** पूरे 18 दिन लगभग 2500 साधर्मियों को बैठाकर ही भोजन कराया गया। इसमें विदिशा के साधर्मियों के साथ ही विभिन्न मण्डलों ने उत्साहपूर्वक सहयोग किया। इन मण्डलों में प्रमुख हैं - भोपाल, खनियांधाना, गुना, इन्दौर, पिड़ावा, दिल्ली, जबलपुर, बीना, छिन्दवाड़ा, सागर, आरोन, ललितपुर, मेरठ, खड़ैरी, बासौदा, सिरोंज, इटारसी, सिंगोड़ी, राघौगढ, गढाकोटा, बड़नगर, जैनमिलन एवं तारण-तरण युवा/महिला मण्डल विदिशा। **(14)** प्रतिदिन रात्रि में मण्डलों को विशेष प्रतीक देकर सम्मानित किया गया। **(15)** भीषण गर्मी में सभी के लिये योग्य बिलछानी किये हुये ताजे शीतल जल की व्यवस्था। **(16)** 18 दिन भिन्न-भिन्न मण्डलों द्वारा जिनेन्द्र-भक्ति का आयोजन। **(17)** 18 दिन मुख्य पाण्डाल में 18 भिन्न-भिन्न कवियों/गायकों के भजनों से सारा वातावरण धर्ममय रहा।

समाचार दर्शन -

विदिशा में 50वाँ स्वर्ण जयंती आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर ज्ञानानन्द महोत्सव सानन्द संपन्न

● देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 3000 से अधिक एवं सैंकड़ों स्थानीय आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में लाभान्वित ●प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित ● शिविर में लगभग 75 विद्वानों द्वारा धर्मप्रभावना ● 250 से अधिक स्नातकों की उपस्थिति।

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ स्वर्णकार कॉलोनी स्थित विनायक बैन्क्वेट हॉल में रविवार, दिनांक 15 मई से बुधवार, दिनांक 1 जून तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट व अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, विदिशा द्वारा आयोजित 18 दिवसीय 50वाँ स्वर्ण जयंती वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अत्यंत भव्यता एवं हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

उद्घाटन समारोह – दिनांक 15 मई को शिविर का भव्य उद्घाटन समारोह आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री आई.एस. जैन मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि श्री श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' (पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री, ग्रामीण व विकास भारत सरकार) थे। शिविर के आमंत्रणकर्ता श्री चक्रेशकुमार राजेशकुमार सौरभ वैभव जैन अशोकनगर, शिविर उद्घाटनकर्त्ता पण्डित शिखरचंदजी अलंकार ज्वैलर्स विदिशा थे। ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर ने किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती परिणति जैन विदिशा ने किया।

इस अवसर पर श्री चौबीस तीर्थंकर महामंडल विधान का आयोजन किया गया, जिसके आमंत्रणकर्त्ता श्री प्रकाशचंदजी वेद गुना, विधान के उद्घाटनकर्त्ता श्री देवेन्द्रजी बड़कुल भोपाल थे। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में अनेक विद्वानों के सहयोग से संपन्न हुये। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में प्रशिक्षण शिविर का स्वरूप व उसकी उपयोगिता के बारे में बताया।

प्रात:कालीन प्रवचन – प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के अतिरिक्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा 'प्रवचनसार ग्रन्थ के ज्ञान-ज्ञेय विभागाधिकार' विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रिकालीन प्रवचन – ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा ज्ञानानन्द स्वभाव विषय पर प्रतिदिन हुये प्रवचनों के पूर्व पण्डित धर्मेन्दजी शास्त्री कोटा, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, ब्र.श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित

राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, ब्र.कैलाशचंदजी अचल ललितपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई आदि विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रवचनों के उपरान्त अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

दोपहर की व्याख्यानमाला में – पण्डित सुधीरजी मंगलायतन, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, पण्डित उदयजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, पण्डित संजयजी शास्त्री औरंगाबाद, पण्डित राजेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित मनीषजी कहान जयपुर, पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा आदि विद्वानों के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें – बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर व पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने ली।

प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर ने एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा ली गई।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित नंदकिशोरजी शास्त्री काटोल, पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित संजयजी राउत औरंगाबाद, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित राजेशजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ, पण्डित धमेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ, पण्डित राजेश सेठ मुम्बई, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित मनीषजी कहान जयपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री नागपुर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा, पण्डित उदयजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित साकेतजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनेश सेठ जयपुर, पण्डित गौरवजी शास्त्री जयपुर, पण्डित निखिलजी शास्त्री भायंदर, श्रीमती कमला भारिल्ल जयपुर, श्रीमती रंजना बंसल अमलाई, श्रीमती लता जैन देवलाली, श्रीमती लतारोम अकोला, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, श्रीमती मोना भारिल्ल मुम्बई, श्रीमती अध्यात्मप्रभा जैन मुम्बई, श्रीमती आशा पाटील जयपुर, कु. प्रज्ञा जैन देवलाली, श्रीमती परिणति शास्त्री विदिशा, श्रीमती शुभांगी जैन काटोल, कु. प्रतीति पाटील जयपुर आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रात:कालीन प्रौढकक्षायें – पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, ब्र. कैलाशचंदजी अचल ललितपुर, ब्र. नन्हे भैया, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम आदि विद्वानों द्वारा ली गई।

प्रौढ़ कक्षायें – प्रात:काल पांच समवाय की कक्षा ब्र.सुमतप्रकाशजी द्वारा एवं दोपहर में नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पूर्व गुणस्थान विवेचन की कक्षा पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा ने ली।

बालवर्ग हेतु प्रतिदिन तीनों समय अनेक कक्षाओं का आयोजन किया गया। इन कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों द्वारा किया गया, जिसमें सैंकड़ों बच्चे सम्मिलित हुये।

इसप्रकार 50वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

धूमधाम से दिया शिखरजी का आमंत्रण

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 22 मई को प्रात: तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी में होने वाले पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्वर्ण जयंती समारोह एवं समयसार विधान का भावभीना आमंत्रण पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं श्री टोडरमल स्नातक परिषद् द्वारा दिया गया।

कार्यक्रम के उद्घाटनकर्त्ता श्री अजितजी जैन बड़ौदा, अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, मुख्य अतिथि श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा तथा विशिष्ट अतिथि श्री आदीशजी जैन दिल्ली व श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर थे।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई सहित लगभग 200 स्नातक विद्वान आमंत्रण देने हेतु मंच पर उपस्थित थे। श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कवितापाठ द्वारा आमंत्रण दिया।

इसके अतिरिक्त वर्तमान विद्यार्थीगण धर्मध्वज, पुष्प, स्वर्ण जयंती लोगो आदि लेते हुये मंच तक गाजे-बाजे के साथ अत्यंत उत्साहपूर्वक पहुंचे। पूरा मंच विद्वानों से भर गया था। डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में सभी साधर्मीजनों से शिखरजी में पधारकर स्वर्ण जयंती समारोह व समयसार विधान में सम्मिलित होने की अपील की। इसके अतिरिक्त अभयजी शास्त्री ने कहा कि सामान्यत: समाज विद्वानों को आमंत्रण देता है, परन्तु आज विद्वात्गण समाज को आमंत्रण दे रहे हैं। सभा में उपस्थित लगभग 2 हजार शिविरार्थियों ने हाथ उठाकर शिखरजी में आने की भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

इस कार्यक्रम के पूर्व दिनांक 1 से 6 फरवरी 2017 तक दीवानगंज-भोपाल में होने वाले पंचकल्याणक का आमंत्रण दिया गया।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 31 मई को श्री महिपालजी शाह बांसवाड़ा की अध्यक्षता में प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि सभी विद्वत्गण एवं सभी प्रशिक्षक अध्यापकगण मंच पर उपस्थित थे। अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती भाषा में रखे। सभी ने प्रशिक्षण विधि की प्रशंसा करते हुये अपने नगर में पाठशाला संचालन का संकल्प व्यक्त किया। सैंकड़ों प्रशिक्षार्थियों ने भी अपने नगर में पाठशाला संचालन का संकल्पपत्र भरकर दिया। अन्त में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का प्रशिक्षणार्थियों को विशेष उद्बोधन प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का मंगलाचरण कु. श्रुति जैन कोटा ने एवं संचालन पण्डित निखलेशजी शास्त्री के निर्देशन में शुचि जैन गौरझामर एवं आशुतोष जैन आरोन ने किया।

दीक्षांत व समापन समारोह - दिनांक 1 जून को प्रात: श्री जिनेन्द्र अभिषेक व नित्यनियम पूजन के पश्चात् मण्डप से श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर किले अन्दर तक गाजे-बाजे के साथ श्रीजी की शोभायात्रा निकाली गई। इसके पश्चात् शिविर का दीक्षांत एवं समापन समारोह डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री महेन्द्रजी चौधरी एवं श्री सुनीलजी जैन 501 भोपाल तथा विशिष्ट अतिथि श्री धन्नालाल अरुणकुमारजी भोपाल व श्री संजयजी बाटा बीनावाले थे।

शिक्षण शिविर की रिपोर्ट पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ, प्रशिक्षण शिविर की रिपोर्ट पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा एवं आवासादि की रिपोर्ट पण्डित अविरलजी शास्त्री विदिशा ने दी। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने आयोजन समिति के विशेष योगदान का उल्लेख करते हुये प्रमुख पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान करवाया। सभी को पण्डित शांतिकुमारजी ने तिलक एवं श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने माल्यार्पण किया। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के साथ पण्डित शिखरचंदजी, डॉ. आर. के. जैन एवं श्रीमती सुशीलाजी बड़कुल (ध.प. स्व.श्री जवाहरलालजी बड़कुल) ने भी अपने विशेष वक्तव्य में प्रशिक्षण शिविर की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। डॉ. भारिल्ल के अध्यक्षीय एवं दीक्षांत भाषण के पश्चात् सभी प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कार वितरण किया गया।

बालबोध प्रशिक्षण में प्रथम स्थान कु. दीपिका जैन छिन्दवाड़ा व कु. प्रियंका जैन उदयपुर ने, द्वितीय स्थान सक्षम जैन मंगलायतन व प्रियंका सिंघई भोपाल ने, तृतीय स्थान संयम जैन खैरवाडवास व दीपाली जैन भोपाल ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम स्थान शाश्वत जैन भोपाल ने, द्वितीय स्थान संदीप जैन कुम्हेर ने और तृतीय स्थान कु. स्वरूपा संजय राउत औरंगाबाद व कु. शुचि जैन गौरझामर ने प्राप्त किया।

विदिशा में मनाया संकल्प दिवस

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर में दिनांक 25 मई को **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** का जन्मदिन प्रतिवर्ष की भांति संकल्प दिवस के रूप में मनाया गया। सर्वप्रथम डॉ. भारिल्ल व पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल को सपरिवार पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् के सभी सदस्य गाजे-बाजे के साथ उत्साहपूर्वक मण्डप के मुख्य हॉल से मंच तक लेकर आये। समारोह में सर्वप्रथम पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने सभी स्नातकों को आजीवन तत्त्वप्रचार-प्रसार का संकल्प दिलाया। सभी स्नातकों ने खड़े होकर आजीवन तत्त्वप्रचार करने का संकल्प लिया।

इसी अवसर पर डॉ. भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के प्रशिक्षण शिविर के साथ ही जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में जीवन समर्पित करने हेतु दि.जैन मुमुक्षु मण्डल विदिशा की ओर से शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर समिति द्वारा तिलक, माल्यार्पण, श्रीफल भेंट करते हुये रजत टोपी पहनाकर विशेष सम्मान किया गया।

श्री टोडरमल स्नातक सम्मेलन संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 21 मई को श्री टोडरमल स्नातक सम्मेलन के अन्तर्गत स्नातक विद्वानों द्वारा **'हम और हमारा स्मारक'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित गुलाबचंदजी बोरालकर एलोरा, श्रीमती स्वानुभूति जैन मुम्बई, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित संतोषजी शास्त्री बकस्वाहा आदि विद्वानों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री निशिकांतजी औरंगाबाद एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मंगलसेनजी जैन दिल्ली, श्री मुकेशजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री मुकेशजी जैन मेरठ, श्री सुनीलजी ग्वालियर, श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन छिन्दवाड़ा, डॉ. भरतजी जैन उज्जैन उपस्थित थे। गोष्ठी का मंगलाचरण श्री विवेकजी शास्त्री पिड़ावा ने एवं संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

आगामी कार्यक्रम...

'मोना' (MONA) द्वारा आदरणीय बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' की स्मृति में दो शिविर आयोजित किये जायेंगे - (1) तीर्थधाम मंगलायतन-अलीगढ में दिनांक 26 से 31 अक्टूबर 2016 तक कर्त्ता-कर्म अधिकार एवं चैतन्य की चहल-पहल विषय पर। **(2)** देवलाली-नासिक में दिनांक 7 से 14 नवम्बर 2016 तक सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार एवं चैतन्य की चहल-पहल विषय पर। **सभी साधर्मीजन शिविर में पधारकर धर्मलाभ लें।**

51वाँ प्रशिक्षण शिविर बोरीवली मुम्बई में

बोरीवली मुमुक्षु मण्डल ने संभाला प्रशिक्षण शिविर ध्वज

रविवार दिनांक 29 मई को श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल बोरीवली-मुम्बई द्वारा आगामी 51वें प्रशिक्षण शिविर का आमंत्रण हर्षोल्लासपूर्वक दिया गया। बोरीवली मुमुक्षु मण्डल के सदस्यगण मेवों से भरे थाल लेकर गाजते-बाजते मंच पर आये और डॉ. भारिल्ल व पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल को श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया। विदिशा की शिविर समिति द्वारा बोरीवली मण्डल के सदस्यों का सम्मान करते हुये प्रशिक्षण शिविर का विशेष ध्वज उन्हें थमाया गया। उपस्थित सभी मुमुक्षु भाई-बहिनों ने आगामी शिविर में आने की भावना व्यक्त की।

इस अवसर पर मुम्बई एवं गुजरात से पधारे 51 लोगों के प्रतिनिधि मण्डल ने 51वें प्रशिक्षण शिविर का आमंत्रण दिया, जिनमें श्री अशोक वीरचंद शाह, श्री मुकुन्द कस्तूरचंद शाह, श्री भूपेन्द्र बाबूलाल शाह, श्री हंसमुखलाल डाह्यालाल शाह, श्री निर्मल मुकुन्द शाह, श्री राजेश धीरजलाल शेठ, श्री पंकज ज्ञानचंद गोधा आदि महानुभाव प्रमुख थे।

कनाडा में अभूतपूर्व धर्मप्रभावना

(1) एडमोंटोन (कनाडा) : यहाँ दिनांक 24 से 30 मई तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रात: लगभग 3 घंटे में नित्य नियम पूजन के साथ सीमंधर पूजन एवं सिद्ध पूजन पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला। साथ ही प्रतिदिन सायंकाल अष्टकर्म को आधार बनाकर मार्मिक प्रवचन हुये। एक दिन लगभग 200 साधर्मियों की उपस्थिति में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का परिचय एवं सम्मेदशिखर हेतु स्वर्ण जयंती का आमंत्रण दिया गया। वहाँ उपस्थित लोगों में से सिर्फ दो ही लोग टोडरमल स्मारक के बारे में थोड़ा बहुत जानते थे। जब उनको टोडरमल स्मारक के कार्यों एवं गतिविधियों का विस्तृत परिचय दिया गया तो सभी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की। कुछ लोगों ने तो स्मारक की भूमि पर एक बार अवश्य आकर जीवन धन्य करने की बात कही। ज्ञातव्य है कि यहाँ अन्य कोई जैन विद्वान पहले कभी नहीं आये।

- श्रद्धा सम्यक् शाह

(2) टोरंटो (कनाडा) : यहाँ नवनिर्मित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 1 से 5 जून तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा अपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

इस प्रसंग पर पंच परावर्तन, समवशरण का स्वरूप एवं तीन लोक आदि विषयों पर सारगर्भित प्रवचनों के अतिरिक्त प्रतिदिन मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। शनिवार एवं रविवार को प्रात: अर्थ सहित पूजन एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का कार्यक्रम भी हुआ यहाँ भी एक दिन टोडरमल स्मारक का परिचय एवं स्वर्ण जयंती का आमंत्रण दिया गया।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश का -

प्रांतीय अधिवेशन संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का मध्यप्रदेश प्रांतीय अधिवेशन फैडरेशन के मध्यप्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर की अध्यक्षता में दिनांक 20 मई 2016 को विदिशा में सानन्द संपन्न हुआ, जिसमें देश के विभिन्न भागों से पधारे अनेक प्रतिनिधियों व पदाधिकारियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर सम्पूर्ण मध्यप्रदेश की इकाईयों ने अपने-अपने कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। साथ ही जिन शाखाओं द्वारा सराहनीय कार्य किये गये उन्हें पुरस्कृत भी किया गया, जिनमें विदिशा, ग्वालियर, भिण्ड, जबलपुर, करेली, राघौगढ, इन्दौर की शाखाओं के कार्यों की विशेष सराहना की गई।

आगामी माह में आने वाले व्रत त्यौहार की जानकारी वाला समय चक्र का विमोचन उपस्थित अतिथियों द्वारा किया गया। श्री विजयजी बड़जात्या द्वारा आगामी वर्ष में पुरस्कार के मापदंड भी निर्धारित किये गये। साथ ही फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने भी सम्बोधित किया। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में नई कार्यकारिणी का गठन किया गया एवं सभी को शपथ विधि का कार्यक्रम ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा संपन्न कराया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश द्वारा श्री विजयजी बड़जात्या, श्री पदमजी पहाड़िया, श्री राजेशजी काला का सम्मान प्रतीक चिह्न प्रदानकर किया गया। इसके अतिरिक्त श्रेष्ठ युवा कार्यकर्त्ता के रूप में श्री पुष्पेन्द्र जैन भिण्ड एवं श्री नितिन शास्त्री रायपुर का 11 हजार की सम्मान राशि देकर विशेष सम्मान ब्र. सुमतप्रकाशजी ने अपने करकमलों से किया।

इससे पूर्व दिनांक 19 मई को सम्पूर्ण मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ से पधारे फैडरेशन की विभिन्न शाखाओं के पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधियों की एक अंतरंग मीटिंग संपन्न हुई, जिसमें सभी प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी शाखाओं के कार्यों और आगामी कार्यक्रमों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

15 जून से 15 जुलाई	विदेश यात्रा	धर्मप्रचारार्थ
31 जुलाई से 9 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
29 अगस्त से 5 सित.	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
6 से 15 सितम्बर	औरंगाबाद	दशलक्षण पर्व
9 से 14 अक्टूबर	सम्मेदशिखरजी	स्वर्ण जयंती समारोह एवं समयसार विधान

आई.ए.एस. में चयन पर विशेष सत्कार

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 25 मई की रात्रि में श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नताक पण्डित संजयजी बासल्ल के सुपुत्र प्रमयेश बासल्ल ने भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा (आई.ए.एस.)में 109वीं रैंक एवं पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर के सुपुत्र अगम जैन ने 133वीं रैंक प्राप्त कर मुमुक्षु समाज एवं श्री टोडरमल महाविद्यालय को गौरव प्रदान किया है। इस उपलक्ष्य में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दोनों को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल आदि विद्वत्जनों के साथ दोनों के माता-पिता आदि परिजन भी मंच पर उपस्थित थे।

अ.भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् की ओर से भी डॉ. राजेन्द्र बंसल ने भी प्रशस्ति-पत्र देकर दोनों का सम्मान किया। संचालन पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई ने किया।

मुम्बई में डॉ भारिल्ल के विशेष प्रवचन

मुम्बई : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन उत्कर्ष मुमुक्षु मण्डल मलाड के विशेष आग्रह पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा दिनांक 11 से 13 जून तक मलाड (ईस्ट) में रामलीला मैदान के हॉल में समयसार-गाथा 73 पर विशेष प्रवचन हुये। लगभग 250 साधर्मियों ने प्रवचनों का लाभ लिया। दिनांक 12 जून को स्वर्ण जयंती शिखरजी शिविर का आमंत्रण पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने दिया। इस अवसर पर पण्डित रूपेशजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित पवनजी शास्त्री भी उपस्थित रहे। **– प्रवीणभाई शाह, मलाड**

प्रशिक्षण शिविर में प्रथम बार अंग्रेजी में प्रशिक्षण

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर इस वर्ष ब्र. सुमतप्रकाशजी की विशेष प्रेरणा से प्रथम बार अंग्रेजी में भी बालबोध प्रशिक्षण की कक्षाओं का संचालन किया गया। अंग्रेजी में अध्यापन कार्य श्रीमती स्वानुभूति शास्त्री, आराध्य टडैया शास्त्री एवं जिनेश शेठ मुम्बई द्वारा संपन्न हुआ। इन कक्षाओं में 22 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया, यह स्वर्ण जयंती प्रशिक्षण शिविर की विशेष उपलब्धि रही।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

श्रुतपंचमी पर्व सानन्द संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 9 जून को श्रुतपंचमी पर्व अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: 6.30 बजे सभी बहिनों द्वारा अपने सिर पर षट्खण्डागम ग्रन्थ के सभी भागों को लेकर शोभायात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् पंचतीर्थ जिनालय पर विशेष पूजन हुई। इस अवसर पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा श्रुतपंचमी विषय पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला। साथ ही आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के श्रुतपंचमी विषय पर सी.डी. व वीडियो प्रवचन भी हुये। दिनांक 10 जून को रात्रि में महिला मण्डल द्वारा गोष्ठी का आयोजन किया गया। सभी कार्यक्रम पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में संपन्न हुये।

(2) विदिशा (म.प्र.) : यहाँ श्री शीतलनाथ जैन बड़ा मंदिर किला अंदर में दिनांक 9 जून को श्रुतपंचमी महोत्सव संपन्न हुआ। प्रात: 7 बजे जिनेन्द्र अभिषेक एवं पूजन-विधान का कार्यक्रम हुआ। तत्पश्चात् ब्र. अमित भैया द्वारा श्रुतपंचमी पर्व पर प्रवचन हुये।

(3) छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ जिनालय गोलगंज में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 9 जून को श्रुतपंचमी महोत्सव मनाया गया। इसके अन्तर्गत प्रात: देव-शास्त्र-गुरु पूजन के पश्चात् जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई।

(4) दुबई : यहाँ श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर जिनवाणी पूजन के अतिरिक्त डॉ. नीतेश शाह द्वारा मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पाठशाला के बच्चों द्वारा जिनवाणी सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

(5) दिल्ली : यहाँ विश्वास नगर स्थित श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम चैत्यालय में ज्ञान चेतना ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर दिनांक 11 व 12 जून को श्रुतस्कंध विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित राकेशजी शास्त्री घेवरा मोड, पण्डित सुदीपजी शास्त्री आदि का समागम प्राप्त हुआ। दिनांक 12 जून को प्रात: जिनेन्द्र-पूजन के उपरान्त जिनवाणी पालकी शोभायात्रा निकाली गई। विधि विधान के समस्त कार्य पण्डित राकेशजी के निर्देशन में पण्डित सुमितजी, पण्डित विवेकजी, पण्डित मयंकजी एवं पण्डित अरहंतजी के सहयोग से संपन्न हुये।

(6) उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल मुखर्जी चौक मंदिर में दिनांक 9 जून को श्रुतपंचमी पर्व मनाया गया। प्रात: श्रुतपंचमी की पूजन की गई। तत्पश्चात् विशाल जुलूस का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री द्वारा श्रुतपंचमी विषय पर प्रवचन हुआ। सायंकाल पण्डित खेमचंदजी शास्त्री द्वारा प्रवचन हुआ। कार्यक्रम का संचालन पण्डित तपिशजी शास्त्री द्वारा किया गया।

आध्यात्मिक संगोष्ठियाँ संपन्न

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 23 मई को **'क्रमबद्धपर्याय'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, डॉ. महावीरजी शास्त्री उदयपुर, जिनेशजी शेठ मुम्बई आदि ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का मंगलाचरण मनीषजी सिद्धांत नागपुर ने एवं संचालन आशीषजी शास्त्री भिण्ड ने किया।

दिनांक 24 मई को **'निमित्त-उपादान'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. ए.डी. शर्मा (दर्शनविभागाध्यक्ष-केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर) उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त अंकितजी शास्त्री धार, रत्नेशजी शास्त्री सोनागिर, नितेशजी शास्त्री कोटा, शुभमजी शास्त्री सिद्धायतन, जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण श्री विवेकजी शास्त्री दलपतपुर ने एवं संचालन श्रीमती परिणति शास्त्री विदिशा ने किया।

शोक समाचार

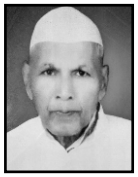

(1) कोटा (राज.) निवासी पण्डित रामकिशोरजी का दिनांक 8 जून को 89 वर्ष की उम्र में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अच्छे स्वाध्यायी थे। सोनगढ में लगने वाले श्रावण मास के शिविर में आप नियमित रूप से जाते थे। कई वर्षों तक आप दशलक्षण पर्व में प्रवचनार्थ भी गये। ज्ञातव्य है कि आप बाबू जुगलकिशोरजी युगल के लघुभ्राता थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2 हजार रुपये प्राप्त हुये।

(2) खनियांधाना (म.प्र.) नगर के गौरव श्री शिखरचंदजी पुजारी का दिनांक 30 मई को विदिशा प्रशिक्षण-शिविर में दोपहर 3 बजे प्रवचन सुनते हुये शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री संजय पुजारी खनियांधाना के पिताजी थे।

(3) गंजबासौदा (म.प्र.) निवासी श्री गुलाबचंदजी जैन का दिनांक 15 मई को शांतपरिणामोंपूर्वक हो गया। आप विदिशा प्रशिक्षण शिविर के उपाध्यक्ष थे। आपकी स्मृति में संस्था को 1002/- रुपये प्राप्त हुये।

(4) उज्जैन (म.प्र.) निवासी श्री बिरधीचन्दजी जैन की स्मृति में संस्था को 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

मुनि श्री निर्वाणसागरजी महाराज के साथ अशोकनगर पंचकल्याणक के अवसर पर दीक्षा कल्याणक के प्रसंग पर प्रवचन करते हुये डॉ. भारिल्ल। साथ में बायें से ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल', डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर। डॉ. भारिल्ल के पीछे पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल भी दिखाई दे रहे हैं।

श्रवणबेलगोला के भट्टारक कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्तिजी के साथ चर्चा करते हुये डॉ. भारिल्ल।

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17*

इतिहास के झरोखे से...

अजमेर नगर में ब्र. हेमराजजी, ब्र. राजकुमारजी, ब्र. दीपचन्दजी (टीकमगढ), ब्र. बाबूलालजी (अधिष्ठाता–उदासीन आश्रम, इन्दौर) आदि की उपस्थिति में प्रवचन करते हुये डॉ. भारिल्ल।

बापूनगर, जयपुर में निर्मित वीतराग–विज्ञान भवन के उद्घाटन के अवसर पर डॉ. भारिल्ल के साथ बायें से श्री शान्तिभाई जवेरी मुम्बई, सर एम.के. गाँधी लन्दन, विद्वद्वर्य लालचन्दभाई मोदी, राजकोट एवं रतनलालजी गंगवाल। पास में नेमीचंदजी पाटनी भी दिखाई दे रहे हैं।

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह–सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**